>

Title: Need to implement the recommendations of M.S. Swaminathan Commission on Agriculture and take suitable measures for the welfare of the farmers.

श्री गजानन ध. बाबर (मावल): हमारे देश में खेती को मानसून का जुआ कहा जाता है। आधुनिकता से खेती में कई बदलाव आये, मगर खेती का जोखिम कम नहीं हुआ। इसमें कई नए तरह के जोखिम जरूर जुड़ गए। देश का किसान मौसम के जोखिम के अलावा सरकारी तंत्र और आधुनिक तकनीक का जोखिम भी एक साथ झेलता है।

किसान आत्महत्या फसलों का नुकसान होने की वजह से नहीं बल्कि फसल के सही दाम न मिल पाने की वजह से कर रहे हैं। यदि फसल का उचित दाम मिल जाता तो वे ऐसा आत्मघाती कदम उठाने के लिए क्यों मजबूर होते।

घटिया खाद-बीज, नकली कीटनाशक और कर्ज किसानों की मौत की बड़ी वजह बने हैं। फसल बीमा दर का फायदा शायद ही किसानों को मिल पाता है।

फसल बीमा करने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां ऐसी शर्तें रख देती है ताकि हर्जाने का दावा मान्य होने पर कंपनियों को मामूली भुगतान करना पड़े। फसल बीमा के नाम पर देश भर में किसानों के साथ् न्याय नहीं हो रहा है। किसान फसल तबाह होने से मर रहे हैं और बीमा कंपनियां मुनाफा बटोर रही हैं। जब किसी वजह से फसल चौपट होती है तब किसान ही मुसीबत में होता है। लेकिन जब पैदावार अच्छी होती है और उसे अपनी फसल का वाजिब दाम नहीं मिल पाता तब भी वह मुसीबत में होता है। वाजिब दाम न मिल जाने की वजह से उसे घाटा उठाना पड़ता है। यही घाटा कई बार उसकी मौत की वजह बनता है।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि कृषि वैज्ञानिक एम एस स्वामीनाथन आयोग ने सरकार को किसानों के कल्याण के लिए कइ सिफारिशों के कदम सुझाये थे। लेकिन इस रिपोर्ट पर सरकार ने अभी तक कोइ कार्यवाही नहीं की है। यह सिफारिश मान्य की जाए, केंद्र व राज्य सरकारें किसानों के हितों तथ उनके संरक्षण पर कोइ ध्यान दें।